R54T07U

संकलित परीक्षा - I (2014)

हिन्दी 'अ'

कक्षा - X

निर्धारित समय : 3 घण्टे | अधिकतम अंक : 90

निर्देश :

(1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग और घ।

(2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड-क

(अपठित बोध)

1 **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए—** 5

भारत में विभिन्न भाषा-भाषी, धर्म एवं सम्प्रदायों के लोग रहते हैं, अत: अपने-अपने क्षेत्रों, भाषाओं आदि के कारण क्षेत्रीयतावाद का पनपना स्वाभाविक है। क्षेत्रीयतावाद यदि राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा किए बिना क्षेत्रीय समस्याओं के निराकरण एवं क्षेत्र के विकास के लिए किया जाए, तो राष्ट्रीय एकता को कोई ख़तरा नहीं है। वस्तुत: क्षेत्रीयतावाद भारतीय संविधान के दायरे में ही होना चाहिए। क्षेत्रीयतावाद एवं राष्ट्रवाद के सुन्दर समायोजन से राष्ट्रीय एकता की कड़ी और मज़बूत होती है।

प्रत्येक क्षेत्र के लोग, यदि अपने-अपने ढंग से स्वप्न देखना प्रारंभ कर दें और साधना की अपनी-अपनी राह पकड़ लें, तो राष्ट्र की एकता ख़तरे में पड़ जाएगी, राष्ट्र का विकास अवरुद्ध हो जाएगा, विशृंखल होकर टूट जाएगा, नीड़ के तिनकों की तरह बिखर जाएगा।

(i) प्रत्येक क्षेत्र के लोगों द्वारा अपने-अपने ढंग से स्वप्न देखने और साधनारत हो जाने का परिणाम यह होगा कि राष्ट्र, —

(क) समृद्ध हो जाएगा।

(ख) घोंसले के तिनकों की तरह बिखर जाएगा।

(ग) ख़तरे में पड़ जाएगा।

(घ) सहज ही एक हो जाएगा।

(ii) क्षेत्रीयतावाद का पनपना इसलिए स्वाभाविक है कि, —

(क) भारतवासी अपनी-अपनी सोचने लगे हैं।

(ख) राष्ट्र का विकास होना ज्यादा ज़रूरी है।

(ग) राष्ट्रवादी विचारधारा लुप्त हो रही है।

(घ) भारत में विविध भाषा, धर्म और संप्रदायों के लोग रहते हैं।

(iii) राष्ट्रीय एकता की कड़ी की सदृढ़ता तथा मज़बूती के लिए सहायक सिद्ध होगी, —

(क) क्षेत्रीयतावाद से विकास की ललक।

(ख) प्रांतीयता की होड़।

(ग) क्षेत्रीयतावाद एवं राष्ट्रवाद से समन्वित विचारधारा।

(घ) समन्वित विकास की कार्य शैली।

(iv) क्षेत्रीय विकास तथा क्षेत्रीय समस्याओं का निराकरण किया जाना तब उपयोगी सिद्ध होगा जब उससे, —

(क) राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा न हो रही हो।

(ख) राष्ट्र का हित सर्वोपरि माना गया हो।

(ग) क्षेत्र के सभी लोग भी समान सोच के हों।

(घ) क्षेत्र को भी राष्ट्र ही माना जाए।

(v) 'नीड़' का आशय है —

(क) घर

(ख) आसरा

(ग) घोंसला

(घ) निवास

2 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए— 5

गणेश शंकर विद्यार्थी राजनैतिक जीवन बिताते हुए भी हिंदी का भरसक प्रचार करते रहे। उन्होंने ''स्वराज्य साहित्य'' का सृजन कराकर हिंदी साहित्य की स्थायी उन्नति की और राष्ट्रभाषा के प्रचार से राष्ट्रीय पुनरुत्थान को क्रियान्वित किया। वह राजनैतिक कांति के युग में जन्मे थे और हिंदी के माध्यम से उत्तरी भारत में पुनर्जागरण किया था। उन्होंने न केवल सामयिक साहित्य को प्रस्फुटित किया अपितु अमर साहित्यिक कृतियों का निर्माण भी कराया। उनके साप्ताहिक पत्र ''प्रताप'' में प्रकाशित राष्ट्रीय कविताएँ उस युग की महान देन हैं। विशेषांक प्रकाशित करके उन्होंने साहित्यिक कृतियों का स्तर बढ़ाया। उन्होंने तत्कालीन उदीयमान कवियों तथा लेखकों से ''स्वराज्य'' के लिए साहित्य का सृजन कराकर एक सराहनीय कार्य किया। हिंदी साहित्य सम्मेलन के गोरखपुर अधिवेशन में विद्यार्थी जी ने बड़े ओजस्वी वक्तव्य द्वारा साहित्य लेखन में आई कमियों का खुलकर पर्दाफाश किया था। वे एक दूरदर्शी और साहित्य तथा समाज की शुचिता के समर्थक महान पुरोधा थे।

(i) 'भरसक' शब्द का तात्पर्य है —

(क) मन लगाकर (ख) पूरी शक्ति लगाकर

(ग) यथाशक्ति (घ) भरा-पूरा

(ii) प्रतिदिन प्रकाशित होने वाले समाचार-पत्र को कहा जाता है —

(क) दैनिक (ख) डेलीन्यूज़ (ग) प्रताप (घ) दैनंदिन

(iii) विद्यार्थी जी द्वारा हिंदी साहित्य की स्थायी उन्नति और राष्ट्र भाषा का प्रचार निष्ठापूर्वक किया गया था—

(क) अपने लेखों द्वारा (ख) विभिन्न अख़बार निकालकर

(ग) ''स्वराज्य साहित्य के सृजन द्वारा (घ) अधिवेशन आयोजित करके

(iv) विद्यार्थी जी द्वारा साहित्यिक कृतियों का स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से प्रकाशित किया था —

(क) एक विशेष सामाचार-पत्र (ख) पत्र का विशेषांक

(ग) अधिवेशन समाचार (घ) 'साहित्य' नामक पत्र

(v) 'पर्दाफाश किया' का आशय है —

(क) पर्दा उघाड़ा (ख) पर्दा हटाया।

(ग) उजागर किया। (घ) जानकारी प्रदान की।

3 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। 5

सौदागर कुछ भी खरीद सकते हैं,
पर क्या वह जानता है ?
दुनिया में सभी चीजें खरीदी नहीं जाती !

महँगा पलंग खरीद सकते हैं
पर नींद नहीं-
व्यंजन खरीद सकते हैं
पर भूख नहीं-

संवेदना का मूल्य कहाँ रहा
तभी तो किसी ने कहा-
सपने वे बड़े नहीं होते, जो सोने के बाद आते हैं,

सपने वे बड़े होते हैं, जो सोने नहीं देते।
अपने वे नहीं होते, जो रोने के बाद आते हैं,
अपने वे होते हैं, जो रोने नहीं देते।

आपने कभी-कही देखा ?
संवेदना स्टोर्स, अपनत्व सेंटर, एहसास कार्नर,
यह सब दिल के अंदर-रखा जाता है,
जो न बेचा जाता है और न खरीदा जाता है।

हम आज सुविधा के लिए सब कुछ खरीदना चाहते हैं
पर तैयार नहीं-असुविधाओं के लिए-
हम समर्थ हैं, हेलीकाप्टर से
केदारनाथ-बद्रीनाथ जा सकते हैं।

पर क्या ईश्वर के करीब आ सकते हैं ?
अमीरी का टेंशन उसी समय तक है-
जब तक गरीबी है ।

अगर रोते चेहरे पर सैकड़ों खर्चकर
मुस्कान आएगी-

तो उस दिन आपकी खरीददारी सफल हो जाएगी

(i) सौदागर गाँठ में पैसा होने पर भी नहीं खरीद सकता है,-

(क) तिजोरी का जेवर (ख) महँगी-महँगी साड़ियाँ

(ग) नींद और भूख (घ) किताबें और उपहार

(ii) 'सपने वे बड़े होते हैं, जो सोने नहीं देते' का आशय है-,

(क) बड़े सपने इन्सान को सोने नहीं देते हैं।

(ख) श्रेष्ठ विचार व्यक्ति को चेतनता प्रदान करते हैं।

(ग) महान लक्ष्य मानव को निरन्तर कर्मशील बनाए रहते हैं।

(घ) बड़े सपनों से नींद बाधित होती है

(iii) कविता में उसी व्यक्ति को अपना माना गया है जो,-

(क) रोने के बाद संवेदना प्रकट करता है (ख) रोने के क्षणों में आँसू पोंछता है

(ग) रोने के कारणों का निवारण करता है (घ) साथ रोता है

(iv) आज का समर्थ व्यक्ति खरीद नहीं आसकता,-

(क) सांसारिक सुख-साधनों को (ख) जीवन की समस्त सुविधाओं को

(ग) भौतिक उपलब्धियों को (घ) परमेश की परमकृपालुता को

(v) खरीददारी की सफलता आधारित है,-

(क) सुख-सुविधा के साधन जुटाने में

(ख) जीवन की असुविधाओं को दूर करने में

(ग) दुखी व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाने में

(घ) थके राहशीर को छाया देने में

4 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। 5

कुछ भी-बन, बस कायर मत बन?
ठोकर मार, पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन!
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

ले-दे कर जीना, क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना?
कुछ न करेगा? किया करेगा-
रे मनुष्य-बस कातर क्रंदन?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

'युद्धं देहि' कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर!
या तो जीत प्रीति के बल पर,
या तेरा पथ चूमे तस्कर!
प्रति हिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन।
कुछ भी-बन, बस कायर मत बन।

तेरी रक्षा का न मोल है

पर तेरा मानव अमोल है।
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है।
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण।
कुछ भी बन, बस कायर मत बन।

(i) कविता में निहित संदेश है,-

(क) वीरता दिखाने का (ख) दुष्टों के दमन का

(ग) साहसी बनने का (घ) कायरता त्यागने का

(ii) युद्ध की स्थिति में निन्दनीय कार्य है,-

(क) शत्रु की हुंकार को अनसुनी करना (ख) विरोधी का विनाश करना

(ग) दुश्मन को प्रेम से जीतना (घ) कातर बनकर जान बचाना

(iii) कवि की दृष्टि में सब कुछ त्याग अभीष्ट है-,

(क) मित्र के लिए। (ख) दुष्ट के लिए।

(ग) इन्सान के लिए (घ) देश के लिए।

(iv) कौन-सा मुहावरा 'दुखी मत हो' अर्थ का वाचक है-,

(क) गम के आँसू पीना (ख) ले-देकर जीना

(ग) पटक मत माथा (घ) राह रोकते पाहन

(v) 'बहा युगों तक खून-पसीना' का अर्थ है,-

(क) जीवन-पर्यंत परिश्रम करना (ख) युगों तक जीवित रहना

(ग) सतत आपदाओं से टकराना (घ) निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़ना

खण्ड-ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

5 निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर भेद लिखिए - 3

(क) जब मैं सतीश के पास पहुँचा तब वह पढ़ रहा था।

(ख) लिखने-पढ़ने वाले से व्यर्थ की बातें करना अच्छा नहीं होता।

(ग) कल गाँव से बहुत से लोग आए थे और वे आज ही गाँव लौट गए।

6 **निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए।** 4

(क) रमेश नहाया। (भाववाच्य में)

(ख) लड़कों के द्वारा अपना कमरा साफ किया गया। (कर्तृवाच्य में)

(ग) माला ने गाना गाया। (कर्मवाच्य में)

(घ) राजा प्रजा का पालन करता है। (कर्मवाच्य में)

7 **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए।** 4

(क) आप <u>वहां</u> क्या कर रहे थे ?

(ख) <u>रजनी</u> माला बना रही थी।

(ग) <u>हम</u> कल वृंदावन जाने वाले हैं।

(घ) जीवन <u>दसवीं</u> कक्षा में पढ़ रहा था।

8 निर्देशानुसार उत्तर दीजिए 4

(क) 'श्रृंगार' और 'हास्य' रसों के स्थायी भाव लिखिए।

(ख) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों में निहित- रसों के नाम लिखिए।

(i) चकित हुआ था तब देख मोर-जोड़ी को
नृत्य करती थी जो सुधबुध भूलकर
साथ उसके था एक नृत्यरत सर्प -भी

प्रवृत्ति गत युग वैर-भाव से रहित थे।

(ii) वह तड़प उठा बाँधो न मुझे हत्यारो।

पंद्रह तो क्या पंद्रह सौ कोड़े मारो।।

मैं जहाँ खड़ा हूँ तिल भर नहीं हिलूँगा।

मैं हर कोड़े पर हँसता हुआ मिलूँगा।।

खण्ड-ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2+2+1) 5

हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने इसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुकभरी मुसकान फैल गई। वाह भई ! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल!

जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वरना तो देशभक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है।

दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अन्तर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वाह भई ! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।

(क) पहली बार पान खाने के लिए कस्बे में रुकने पर हालदार साहब चकित होकर क्यों मुसकराए ?

(ख) हालदार साहब को नेताजी की मूर्ति को देखकर कस्बे के नागरिकों के प्रति किस तरह की अनुभूति हुई ? उनके अनुसार देशभक्ति का स्वरूप क्या होता जा रहा है ?

(ग) दूसरी बार मूर्ति को देखकर उन्हें उसमें क्या अंतर दिखाई दिया था?

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-

10(i) ''लखनवी अंदाज़'' पाठ के लेखक के द्वारा सेकंड क्लास का टिकट-ही खरीद लेने का कारण स्पष्ट कीजिए। 2

(ii) बालगोबिन की पुत्रवधू के चरित्र की विशेषताओं में से दो प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए। 2

(iii) फ़ादर कामिल बुल्के लेखक के साथ इलाहाबाद में किस संस्था से संबद्ध रहे थे? उस संस्था तथा लेखक के पारिवारिक उत्सवों में फ़ादर के योगदान की विवेचना कीजिए। 2

(iv) ''नेताजी का चश्मा'' पाठ को पढ़कर आप जो अनुभव करते हैं उसे अपने शब्दों में लिखिए तथा बताइए आज जबकि देश भक्ति मजाक की चीज होती जा रही है ऐसे वातावरण में भी निराश होने की आवश्यकता क्यों नहीं है? तर्कसहित उत्तर दीजिए। 2

(v) ''नम आंखों को गिनना स्याही फैलाना है।'' का आशय 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2

11 **निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए — (2+2+1)** 5

उड़ने को नभ में तुम –
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो, हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

(क) कविता में किस ऋतु का वर्णन है और वह क्या कारण है कि उससे आँख नहीं हट रही है?

(ख) ''पत्तों से लदी डाल, कहीं हरी, कहीं लाल'' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) ''कहीं पड़ी है उर में, मंद-गंध-पुष्प-माल'' में निहित सौंदर्य को स्पष्टतः व्यक्त कीजिए।

12(i) ''अट नहीं रही है'' कविता से किस ऋतु का वर्णन है और ऐसी कौन-सी चीज है जो नहीं अट रही है ? 2

(ii) श्रीकृष्ण ने अपने किन-किन अंगों में क्या-क्या पहना हुआ है ? 'देव' कवि की कविता के आधार पर लिखिए। 2

(iii) गोपियों का मन किसने चलते समय चुरा लिया था ? अब वे क्या चाहती हैं ? 2

(iv) ''भूलें अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊँ मैं'' का भाव स्पष्ट करके कवि की प्रकृति तथा प्रवृत्ति पर प्रकाश डालिए। 2

(v) 'यह दंतुरित मुसकान' को स्पष्ट करते हुए बताइए कि वह मरे हुए में भी जान कैसे डाल देती है ? 2

13 'फसल' को काटने के बाद उसे बाल-मंडली किस प्रकार ओसाती थी ? बाद में बाबू जी आकर क्या प्रश्न करते थे ? इस प्रश्न में निहित भाव को स्पष्ट करते हुए बताइए कि उस युग की बाल-मंडली द्वारा खेले जाने वाले खेलों में कौन-सी महत्वपूर्ण बात छिपी होती थी ? 5

खण्ड-घ

(लेखन)

दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए।

14(i) **माँ का महत्त्व** 10

- प्रस्तावना
- जन्मदात्री, पालनकर्त्री
- माँ के बच्चे के प्रति कर्त्तव्य
- बच्चे के माँ के प्रति कर्त्तव्य
- माता की उपेक्षा एक घृणित कार्य

अथवा

(ii) **सर्व-शिक्षा अभियान** 10

- प्रस्तावना
- शिक्षा की अनिवार्यता से देशहित
- कमियों को दूर करने के उपाय
- उपसंहार

अथवा

(iii) **आज का युग-विज्ञापन का युग** 10

- प्रस्तावना
- वर्तमान समय की विशेषताएँ
- वैज्ञानिक उपकरणों की उपादेयता
- युगानुरूप विज्ञान का महत्त्व
- उपसंहार

15 गुडगाँव से आपके मित्र नरेंद्र ने आपको अपनी बहन की शादी पर आमंत्रित किया है, आप परीक्षाओं में व्यस्त होने के कारण जाने में असमर्थ हैं। अपनी असमर्थता व्यक्त करते हुए नरेंद्र को एक बधाई पत्र लिखें। 5

16 **निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और लगभग एक तिहाई शब्दों में उसका सार लिखिए।** 5

आत्मनिर्भरता का अर्थ है — अपने ऊपर निर्भर रहना। जो व्यक्ति दूसरे के मुँह को नहीं ताकते वे ही आत्मनिर्भर होते हैं। वस्तुतः आत्मविश्वास के बल पर कार्य करते रहना आत्मनिर्भरता है। आत्मनिर्भरता का अर्थ है — समाज, निज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करना। व्यक्ति ही समाज तथा राष्ट्र में आत्मविश्वास की भावना, आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनता है। स्वावलंबन जीवन की सफलता की पहली सीढ़ी है सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को स्वावलंबी अवश्य होना चाहिए। स्वावलंबन व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के जीवन में सफलता-प्राप्ति का महामंत्र है। स्वावलंबन जीवन का अमूल्य आभूषण है, वीरों तथा कर्मयोगियों का इष्टदेव है। सर्वांगीण उन्नति का आधार है।

-o0o0o0o-